द ग्लोबल टाइम्स
सोमवार, सितम्बर 14, 2026

ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे

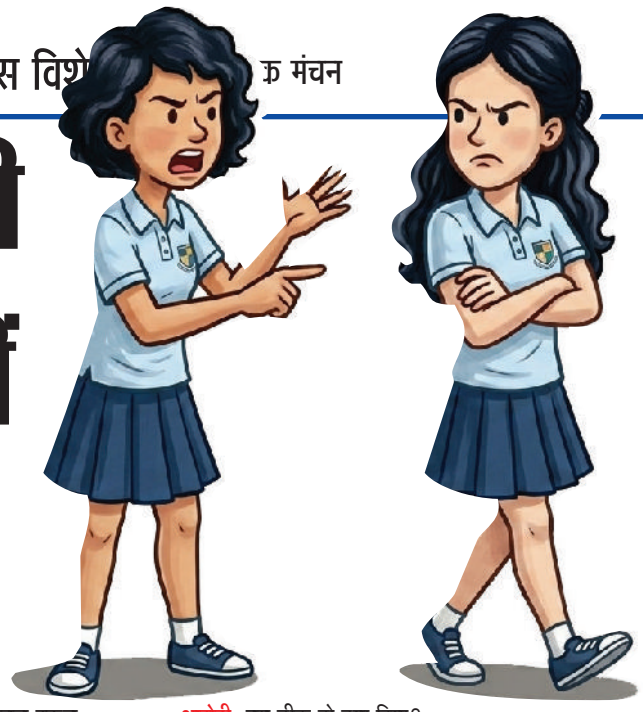

अंश यादव, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल ग्वालियर, कक्षा 7 ए

पात्र: सूत्रधार, रिया, मायरा, आरोही

सूत्रधार: रिया, मायरा और आरोही बहुत अच्छे मित्र थे और उनके विद्यालय में एक वार्षिक उत्सव आ रहा था। रिया और मायरा ने सोचा कि वह एक छोटा हास्य नाटक करेंगे। रिया और मायरा बात करते हुए –

रिया: मायरा! एक ऐसा नाटक करते हैं जिसमें हम बताएँगे कि हम विपरीत स्वभाव के होते हुए भी बहुत अच्छे मित्र हैं।

मायरा: तुम सही कह रही हो रिया। यह अच्छा विचार है। हम बताएँगे कि हम दोनों के स्वभाव और हाव-भाव में कितना अंतर है। जैसे- तुम अपने चेहरे पर एक घिनौना-सा फेस मास्क लगाती हो खूबसूरत दिखने के लिए।

रिया (चिढ़ते हुए): तो तुम्हारे कीचड़ से सने गंदे जूतों से भी गुलाबों जैसी खुशबू नहीं आती।

मायरा (क्रोध में): ठीक है, तुम किसी और को ही चुन लो। मैं जा रही हूँ। कोई नाटक नहीं करना है तुम्हारे साथ।

रिया (गुस्से से): नहीं, मैं जा रही हूँ। तुम्हें जाने की जरूरत नहीं।

सूत्रधार: फिर ये दोनों चले गए। अब आरोही रिया के पास जाती है –

आरोही: तुम ठीक हो क्या रिया?

रिया: नहीं, मेरा और मायरा का झगड़ा हो गया है।

आरोही: क्यों? किस बात पर?

रिया: मुझे उससे ऐसे बात नहीं करनी चाहिए थी। मैंने उसके फेस मास्क को लेकर गलत कहा।

आरोही: बात सही है तुम्हारी। उससे माफी माँग लो। वो भी मान जाएगी, मित्र है हमारी।

रिया: तुम सही कह रही हो। मैं थोड़ी देर बाद मिलती हूँ।

रिया (कुछ देर बाद): मायरा, मैं तुमसे माफी माँगना चाहती हूँ। शायद तुम्हारा फेस मास्क इतना भी बुरा नहीं है और मुझे इस तरह से बात नहीं करनी चाहिए थी।

मायरा: मैं भी तुमसे माफी माँगने आ ही रही थी। मेरा मास्क थोड़ा-सा तो घिनौना है वैसे।

रिया: मुझे हमारे नाटक के लिए एक अच्छा विचार आया है। (थोड़े दिन बाद) देवियों और सज्जनों, स्वागत करते हैं मायरा, रिया और उनकी हास्य नाटिका का। रिया और मायरा दोनों मंच पर आते हैं। रिया अपने चेहरे पर घिनौना फेस मास्क लगाकर आती है, जो मायरा लगाया करती थी। और फिर मायरा आई। वह रिया के कीचड़ वाले जूते पहन के आई थी। सारे दर्शक जोर-से हँसे। मायरा रिया बन रही थी और रिया मायरा बन रही थी। दोस्तो! मायरा और रिया ने एक-दूसरे की आदतों पर ध्यान न देते हुए अपनी दोस्ती को पहचाना। इसमें उन्होंने अपना बड़प्पन दिखाया। जी टी

भाषा का मूल्य

अद्विका शर्मा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, वसुंधरा सैक्टर 1, कक्षा 10 सी

पात्र: प्रोफेसर, अद्वैत, नायरा, विवान, हिन्दी

दृश्य 1

(कॉलेज का वातावरण। तीनों छात्र एक ओर खड़े बातचीत कर रहे हैं।)

अद्वैत: आजकल सफलता की भाषा सिर्फ अंग्रेजी बन चुकी है। इंटरव्यू से लेकर व्यक्तित्व तक, सब कुछ उसी से आँका जाता है।

नायरा: हाँ। हिन्दी अब बस किताबों और भाषणों तक सीमित लगती है।

विवान: और सच कहूँ, हिन्दी बोलने वाले लोगों को लोग उतना प्रभावशाली भी नहीं मानते। (पास खड़े प्रोफेसर उनकी बातें सुन लेते हैं।)

प्रोफेसर: तो क्या भाषा का मूल्य केवल उसके बाजार से तय होता है?

अद्वैत: सॉरी सर! आज की दुनिया बहुत व्यावहारिक है। जो भाषा अवसर दे, वही महत्वपूर्ण मानी जाती है।

प्रोफेसर: अवसर केवल भाषा नहीं देती, सोच भी देती है। और सोच की जड़ें हमेशा अपनी मिट्टी में होती हैं।

दृश्य 2

(मंच पर हिन्दी का प्रवेश। सादगी और गरिमा के साथ।)

हिन्दी: मैं तुम्हारी बातें सुन रही थी। अच्छा लगा प्रगति के रास्ते पर चलते हुए तुमने मुझे पीछे छोड़ दिया।

नायरा: आप कौन हैं?

हिन्दी: अरे मुझे नहीं पहचाना! मैं वही हूँ जिसमें तुम्हारे पहले सपने बोले गए थे। वही, जिसमें तुम्हारे घर की आवाज बसती है। मैं हिन्दी हूँ।

विवान: लेकिन समय बदल चुका है। दुनिया वैश्विक हो रही है।

हिन्दी: बदलते समय से मुझे शिकायत नहीं। हर भाषा सीखो, हर संस्कृति को समझो। पर क्या आगे बढ़ने का अर्थ अपनी पहचान खो देना है?

अद्वैत: पर लोग हिन्दी को आधुनिकता से नहीं जोड़ते।

हिन्दी: आधुनिकता भाषा में नहीं, विचारों में होती है। जापान अपनी भाषा में विज्ञान लिखता है, फ्राँस अपनी भाषा में संस्कृति बचाता है, और हम अपनी ही भाषा बोलने में संकोच करते हैं। (कुछ क्षणों का मौन।)

दृश्य 3

प्रोफेसर: जब कोई समाज अपनी भाषा से दूर हो जाता है, तो वह अपनी जड़ों से भी दूर होने लगता है।

नायरा: शायद हमने हिन्दी को केवल एक विषय समझ लिया था, अपनी पहचान नहीं।

विवान: अब समझ आया कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, संस्कृति की स्मृति भी होती है।

अद्वैत: अपनी पहचान पर गर्व करना पिछड़ापन नहीं, आत्मसम्मान है। (सभी मंच के मध्य आते हैं।) सभी मिलकर:

हिन्दी हमारी आवाज है,
हमारी संस्कृति का सम्मान है।
यह केवल शब्द नहीं,
हमारी पहचान है। जी टी

मोबाइल का अधिक प्रयोग

हितार्थ भाटिया, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम सैक्टर 46, कक्षा: 5 ए

संदेश: मोबाइल हमारा सेवक है, स्वामी नहीं। कम उपयोग – सुखद जीवन।

दृश्य 1: (घर)

आरव मोबाइल में गेम खेल रहा है। पास में बोर्ड पर लिखा है: समय बहुत कीमती है'।

माँ: आरव! बेटा खाना खा लो।

आरव: हाँ माँ, बस 2 मिनट।

दादी: बेटा आँखें खराब हो जाएँगी।

आरव: दादी आप भी ना.... सब हो जाएगा। (मोबाइल में व्यस्त)

दृश्य 2: (स्कूल)

शिक्षिका (श्रीमती सीमा): आरव, होमवर्क क्यों नहीं किया?

आरव (घबराते हुए): मैम......

विवेक (दोस्त): चलो आरव खेलते हैं।

आरव: नहीं यार, मैं ऑनलाइन गेम खेलूँगा।

शिक्षिका: बेटा, मोबाइल का अधिक प्रयोग स्वास्थ्य और पढ़ाई को नुकसान पहुँचा रहा है।

दृश्य 3: (परिवर्तन)

आरव मोबाइल का प्रयोग कम करने का सोचता है।

आरव: अब मैं समय बाँटकर चलूँगा – पढ़ाई, खेल और परिवार।

माँ: शाबाश बेटा!

दादी: यही समझदारी है।

पापा: हमें तुम पर गर्व है।

शिक्षिका: वैरी गुड! यही है सही उपयोग। मोबाइल का उपयोग सिर्फ जरूरत पड़ने पर करो, पढ़ाई के लिए करो। जी टी

मोबाइल का मायाजाल

सूजल सिंह, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, विराजखंड, लखनऊ कक्षा: 9 बी

दृश्य 1: मंच के एक ओर नीला प्रकाश फैला है। सूचनाओं की लगातार ध्वनि गूँज रही है। आर्यन कुर्सी पर बैठा मोबाइल में खोया हुआ है। चेहरे पर कृत्रिम चमक, आँखों में थकान। दूसरी ओर हल्का पीला प्रकाश। कुछ पुस्तकें, शांत वातावरण और धीमी बाँसुरी की मधुर तान। अलख पुस्तक पढ़ रहा है। (आर्यन उत्साह से मोबाइल दिखाते हुए)

आर्यन: छोड़ ये पन्ने, देख यहाँ दुनिया कितनी स्मार्ट है, एक क्लिक पर सब हाजिर। ये नया दौर, नई आर्ट है।

अलख: (मुस्कुराकर धीरे से पुस्तक बंद करता है)

तेरी ये आर्ट महज एक काँच की दीवार है,
भीतर इसके सन्नाटा है,
बस बाहर शोर अपार है।

आर्यन: (हँसते हुए)

देख ये लाइक्स का नशा,
यहाँ हर पल एक त्यौहार है,
तेरी इन किताबों में भला कहाँ ये संसार है।

अलख: (गंभीर स्वर में)

तू उंगलियों से पिक्सल छूता है,
मैं पन्नों से जज्बात पढ़ता हूँ,
तू एक ही जगह ठहर गया है,
मैं हर शब्द के साथ बढ़ता हूँ।

दृश्य 2: अचानक मंच का प्रकाश मंद पड़ जाता है। सूचनाओं की आवाजें तीखी और बेचैन करने वाली हो जाती हैं। चारों ओर धुआँ और अँधेरा फैलने लगता है। आर्यन अकेला खड़ा है। उसकी मुस्कान अब घबराहट में बदल चुकी है।

आर्यन: (धीमे और टूटे स्वर में)

सच में मैं अपडेट तो था,
पर खुद से ही बेगाना था,
इस चमकती कैद को मैंने,
अपना ही ठिकाना माना था।

अलख: (धीरे-धीरे आगे बढ़ता है)

जाल तोड़, बाहर देख,
अभी भी आसमान बाकी है,
किताबें मंजिल का पता,
और फोन बस एक साकी है।

दृश्य 3: धीरे-धीरे अंधेरा हटने लगता है। मंच पर सुनहरी रोशनी फैल जाती है। पक्षियों की मधुर चहचहाहट वातावरण को शांत कर देती है। आर्यन धीरे से मोबाइल नीचे रख देता है। वह एक पुस्तक उठाता है और मुस्कुराकर आकाश की ओर देखता है। अलख उसके कंधे पर हाथ रखता है। दोनों साथ आगे बढ़ते हैं।

(दोनों दर्शकों की ओर देखकर)

दोनों: चमक भले लाखों मिल जाए,
मन को सच्चा ज्ञान चाहिए,
यंत्र रहें बस सीमा तक,
जीवन को खुला आसमान चाहिए। जी टी